अमृत कलश टाइम्स

http://amritkalashtimes.com

वर्ष : 18
अंक : 119

प्रयागराज मंगलवार 14 जनवरी 2025

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

खरगे-प्रियंका ने की महाकुंभ के सफल आयोजन की कामना

नई दिल्ली,(एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तथा पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने पौष पूर्णिमा पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए सोमवार से प्रयागराज में शुरू हो रहे महाकुंभ की सफलता की कामना की और कहा कि यह हजारों साल पुरानी आस्था, धार्मिक संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा से जुड़ा मानवता का महाउत्सव है जो भाईचारे, सामाजिक सौहार्द, सद्भाव और समानता का संदेश देता है। खरगे ने अपने संदेश में कहा, "मेरे प्यारे देशवासियों, आज विश्व की प्राचीनतम संस्कृति संगम, तीर्थ राज प्रयागराज में महाकुंभ का शुभारंभ हो गया है। ये भारत की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत का महापर्व है। इस पावन आयोजन के अवसर पर कांग्रेस की ओर से मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। लाखों करोड़ों की संख्या में अगले डेढ़ महीने तक चलने वाले त्रिवेणी संगम के पारंपरिक महोत्सव में पधारे सभी साधु, संत, पंथ, समुदाय और जनता जनार्दन, एकजुट होकर

जाति, वर्ण, और वर्ग के भेदभाव मिटाकर भारत की महान संस्कृति का परिचय पूरे विश्व को देंगे।" उन्होंने कहा, "छुआछूत, ऊँच-नीच,भेदभाव, अंधविश्वास को छोड़कर हम सभी देश की विविधता में एकता के शाश्वत मूल्यों को अपनाकर सौहार्द, सद्भाव, भाईचारे व आपसी प्रेम का संदेश देंगे। अध्यात्म, भक्ति, आस्था व श्रद्धा के इस ऐतिहासिक विहंगम दर्शन महाकुंभ का आयोजन सफल रहे, समानता और एकजुटता का प्रतीक बने, हमारी यही कामना है।" खरगे ने पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक द डिस्कवरी ऑफ इंडियाश में महाकुंभ मेले के वर्णन को उद्धृत करते हुए लिखा, "अपने शहर इलाहाबाद या हरिद्वार में मैं महान स्नान उत्सव, कुंभ मेले में जाता था और देखता था कि लाखों लोग आते हैं, जैसे उनके पूर्वज हजारों सालों से भारत भर से गंगा में स्नान करने आते थे। मुझे तेरह सौ साल पहले चीनी तीर्थयात्रियों और अन्य लोगों द्वारा लिखे गए इन त्योहारों के विवरण याद हैं।

पीएम ने सोनमर्ग टनल का इनॉगरेशन किया: प्रधानमंत्री बोले....

वादा जो किया निभाता हूं

- उमर ने कहा- उम्मीद है जम्मू-कश्मीर के स्टेटहुड का वादा भी पूरा होगा
- पीएम बोले- टनल से सर्दियों में भी बनी रहेगी कनेक्टिविटी, टूरिज्म को भी नए पंख लगेंगे
- मोदी ने किया सोनमर्ग में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जेड-मोड़ सुरंग का उद्घाटन

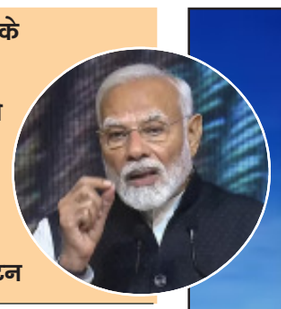

श्रीनगर/सोनमर्ग,(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर के गंदेरबल जिले में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण 6.4 किलोमीटर लंबी जेड-मोड़ (सोनमर्ग सुरंग) का उद्घाटन किया।आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि श्री मोदी सुरंग का उद्घाटन करने के लिए श्रीनगर तकनीकी हवाई अड्डे से एक विशेष हेलिकॉप्टर में मध्य कश्मीर के गंदेरबल जिले के सोनमर्ग पहुंचे। प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उद्घाटन के तुरंत बाद सुरंग में यात्रा की। उन्होंने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सुरंग के निर्माण में लगे श्रमिकों और इंजीनियरों से भी मुलाकात की और उन्हें बधाई दी। वरिष्ठ अधिकारी ने प्रधानमंत्री को सुरंग के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी जानकारी दी। उद्घाटन समारोह में अन्य लोगों के अलावा केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। गौरतलब है कि श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर जेड-मोड़ सुरंग परियोजना का निर्माण 2,700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से किया गया है। इसमें सोनमर्ग मुख्य सुरंग, एक निकास सुरंग और पहुंच मार्ग शामिल हैं। इस सुरंग के निर्माण से पर्यटक वर्ष भर सोनमर्ग आ सकेंगे। साथ ही शीतकालीन पर्यटन, साहसिक खेल और स्थानीय आजीविका को भी बढ़ावा मिलेगा। समुद्र तल से 8,650 फुट की ऊंचाई पर स्थित इस सुरंग से श्रीनगर और सोनमर्ग के बीच लेह के रास्ते में सभी मौसम में संपर्क बढ़ेगा तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण लद्दाख क्षेत्र में भूस्खलन और हिमस्खलन मार्गों की जगह सुरक्षित और निर्बाध पहुंच सुनिश्चित होगा।

महाकुंभ स्पेशल ट्रेनों को जरूरत पड़ने पर डीएफसी ट्रैक से निकालने की योजना

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने प्रयागराज में महाकुंभ मेले के लिए विशेष गाड़ियों के सुचारु संचालन के लिए समर्पित मालवहन गलियारे (डीएफसी) का भी अधिकतम इस्तेमाल करने की योजना बनायी है। सूत्रों

के अनुसार उत्तर मध्य रेलवे में दादरी से मुगलसराय के बीच मुख्य ट्रंक लाइन पर एक भी मालगाड़ी नहीं चलेगी। डीएफसी पर शत प्रतिशत मालगाड़ियां चलायीं जाएंगी। सूत्रों ने यह भी कहा कि यदि जरूरत पड़ी तो महाकुंभ के लिए चलायी जाने वाली विशेष गाड़ियों को डीएफसी की लाइन से निकाला जाएगा। ताकि भीड़ के कारण गाड़ियों का परिचालन बाधित ना हों। गाड़ियां समय से निकल सकें। भारतीय रेलवे ने सोमवार से विशेष गाड़ियों के करीब 13 हजार फेरे लगाने की व्यवस्था की है। प्रयागराज से सभी दिशाओं के लिए अलग अलग स्टेशनों को तय किया गया है। डीएफसी के कारण दिल्ली कानपुर, मुगलसराय मार्ग की गाड़ियों को जल्द मार्ग मिल सकेगा।

महाकुंभ का भव्य शुभारंभय संगम की रेती पर आस्था का सैलाब

महाकुंभनगर,(एजेंसी)। दुनिया के सबसे बड़े सनातन समागम महाकुंभ का भव्य शुभारंभ सोमवार को पहले स्नान पर्व पौष पूर्णिमा के साथ हो गया। संगम की रेती पर बसे भव्य एवं सुरम्य अस्थायी जिले में लाखों श्रद्धालु अमृत स्नान के लिए बढ़े चले जा रहे थे। जानकारी के अनुसार, भोर करीब सुबह तीन बजे से पतित पाविनी गंगा,श्यामल वर्ण यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर स्नान ध्यान करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या सुबह साढ़े नौ बजे तक 60 लाख के आंकड़े को पार कर चुकी थी। आस्था के महासंगम में चहुंओर हर-हर गंगे के जयकारे गूंज रहे हैं। देखे खूबसूरत तस्वीरें... साधु संतों की उपस्थिति से वातावरण भक्ति रस से ओतप्रोत है। गरीब अमीर, जाति धर्म से परे आस्था का यह समागम देश की एकता और अखंडता का प्रतीक बन कर दुनिया भर में अपनी आभा

फैला रहा है। महाकुंभ सनातन धर्म का सबसे बड़ा धार्मिक और आध्यात्मिक पर्व है। इसका आयोजन हर 12 सालों के बाद किया जाता है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर श्रद्धालुओं का अछ्वुत नजारा देखने को मिला। आधी रात से ही श्रद्धालु और कल्पवासी संगम तट पर जुटने लगे थे। हर-हर गंगे और जय श्रीराम के गगनभेदी जयकारों से पूरा मेला क्षेत्र गूंज उठा। विदेशी श्रद्धालुओं ने भी पावन स्नान किया। वैदिक पंचांग के अनुसार प्रथम स्नान स्नान के लिए सुबह 5.27 से लेकर सुबह 6.21 तक का सबसे शुभ माना गया है। लेकिन श्रद्धालु आधी रात के बाद से आस्था की डुबकी लगानी शुरू कर दी। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं तड़के से ही संगम स्नान के लिए पहुंचने लगे। आस्था का ऐसा आलम था कि सिर पर गठरी का वजन भी उनके उत्साह को कम नहीं कर सका। संगम नोज, एरावत घाट और वीआईपी घाट समेत समस्त घाटों पर सुबह से ही श्रद्धालु स्नान करते नजर आए। युवाओं में सनातन संस्कृति और आध्यात्मिकता के प्रति खासा उत्साह देखने को मिला। संगम स्नान और दान-पुण्य में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने पवित्र संगम तट पर पूजा-अर्चना और दान कर पुण्य लाभ अर्जित किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर मेला क्षेत्र में सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए गए हैं। इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर से चप्पे-चप्पे की निगरानी की जा रही है। डीआईजी और एसएसपी खुद चक्रमण कर रहे हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। आधी रात और सुबह तड़के से ही पुलिस बल पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। पहले स्नान पर्व के दौरान इंद्रदेव ने भी अपनी कृपा बरसाई।

योगी ने महाकुंभ के शुभारंभ की दी शुभकामनायें

लखनऊ,(एजेंसी)। दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक और सांस्कृतिक समागम महाकुंभ के लिये उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को शुभकामनायें प्रेषित की हैं। श्री योगी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट किया " पौष पूर्णिमा की बधाई। विश्व के विशालतम आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक समागम श्महाकुम्भश का आज से तीर्थराज प्रयागराज में शुभारंभ हो रहा है। अनेकता में एकता की अनुभूति के लिए, आस्था एवं आधुनिकता के संगम में साधना एवं पवित्र स्नान के लिए पधारे सभी पूज्य सन्तों, कल्पवासियों, श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत है। माँ गंगा आप सभी की मनोकामना पूर्ण करें। महाकुम्भ प्रयागराज के शुभारंभ एवं प्रथम स्नान की मंगलमय शुभकामनाएं। सनातन गर्व-महाकुम्भ पर्व।"

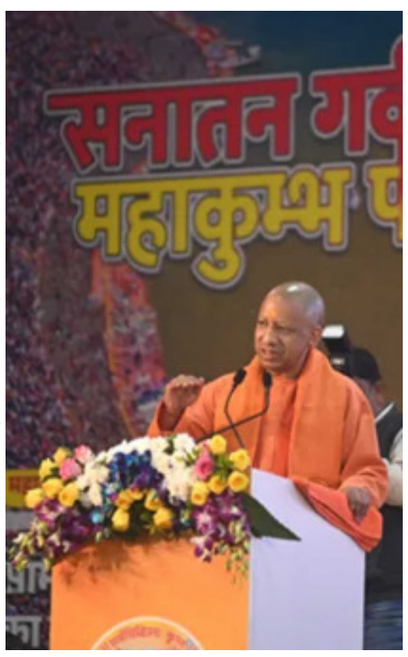

कन्नौज हादसे पर बड़ा खुलासा

- शटरिंग में लगी थीं पतली-पतली बल्लियां, कम थे लोहे के गर्डरय लापरवाही बनी वजह

कन्नौज,(एजेंसी)। कन्नौज रेलवे स्टेशन का कायाकल्प करने के लिए 13.50 करोड़ और गुरसहायगंज रेलवे स्टेशन के लिए 8.95 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। दोनों ही निर्माणकार्य पूरे करने की दिसंबर 2024 डेड लाइन थी। धीमी रफ्तार के कारण आधा काम भी नहीं हो सका है। अमृत भारत योजना के तहत करोड़ों रुपये खर्च कर कन्नौज और गुरसहायगंज के स्टेशनों का कायाकल्प किया जा रहा है। सरकार ने स्टेशनों के कायाकल्प के लिए कार्यदायी संस्था नामित की। संस्था ने इमारतों के निर्माण कार्य में शटरिंग का काम अलग-अलग ठेकेदारों को दे रखा है, जो गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। गुरसहायगंज में सात माह पहले शटरिंग टूटने से निर्माणाधीन छज्जा गिर गया था और दो मजदूर घायल हो गए। हादसे को रेलवे ने गंभीरता से नहीं लिया और जांच को ठंडे बस्ते में डाल दिया। अगर पहली घटना से ही रेलवे ने सबक लिया होता और शटरिंग को लेकर गंभीरता दिखाई होती तो शनिवार को कन्नौज में शटरिंग टूटने से बड़ा हादसा न होता। कहीं न कहीं अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत हो रहे निर्माण कार्य की शटरिंग पोल खोल रही है। कन्नौज रेलवे स्टेशन का कायाकल्प करने के लिए 13.50 करोड़ और गुरसहायगंज रेलवे स्टेशन के लिए 8.95 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। दोनों ही निर्माणकार्य पूरे करने की दिसंबर 2024 डेड लाइन थी। धीमी रफ्तार के कारण आधा काम भी नहीं हो सका है। शनिवार को कन्नौज रेलवे स्टेशन पर निर्माणाधीन इमारत का लिंटर गिरने से 26 मजदूर घायल हो गए। इसमें भी शटरिंग टूटने के कारण हादसा होने की पुष्टि की गई है। इमारत की ऊंचाई को गंभीरता से नहीं लिया गया और लकड़ी की पतली-पतली बल्लियों का शटरिंग में प्रयोग हुआ। इसके अलावा पाड़ बनाने में प्रयोग होने वाले लोहे के पाइप भी लगाए गए, जबकि लोहे के गर्डर कम थे। जनसंपर्क अधिकारी राजेंद्र सिंह का कहना है कि पूरे मामले की जांच के लिए उच्चस्तरीय चार सदस्यीय टीम गठित की गई है। मुख्यालय से टीम जांच करने के लिए आएगी। जांच रिपोर्ट के आधार पर ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। गुरसहायगंज में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत हो रहे। निर्माण कार्य चल रहा है। 29 मई 2024 को निर्माणाधीन छज्जा की शटरिंग टूट गई थी। हादसे में दो मजदूर घायल हो गए थे। तत्कालीन डीआरएम रेखा यादव ने पूरे मामले की जांच कराने की बात कही थी।

चीन सीमा पर स्थिति स्थिर लेकिन संवेदनशील, सैनिकों की तैनाती में कमी नहीं: जनरल द्विवेदी

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने कहा है कि पूर्वी लद्दाख में चीन से लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थिति स्थिर लेकिन संवेदनशील बनी हुई है और वहां तैनात सैनिकों की संख्या में अभी कमी नहीं की जायेगी। सेना प्रमुख ने सेना दिवस से पहले यहां सोमवार को वार्षिक संवाददाता सम्मेलन में पूर्वी लद्दाख में चीन के साथ लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा पर वास्तविक स्थिति के संबंध में पूछे गये सवालों तथा इस संबंध में अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि वहां स्थिति स्थिर लेकिन संवेदनशील बनी हुई है। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष के अंत में दोनों देशों के बीच बनी सहमति के बाद कई मुद्दों का समाधान हुआ है। दोनों सेनाओं के सैनिकों की गश्त तथा चरवाहों की गतिविधि से संबंधित मुद्दों का समाधान हुआ है। उन्होंने कहा कि वहां पर सेना की तैनाती के मामले में भी संतुलन बनाकर रखा गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना किसी भी तरह की स्थिति से निपटने के लिए पूरी सक्षम है। जनरल द्विवेदी ने सवालों के जवाब में कहा कि अप्रैल 2020 के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा से लगते क्षेत्रों में जो गतिरोध बना था। उस समय दोनों तरफ से निर्माण संबंधी गतिविधियां तथा कुछ और बदलाव किये गये हैं। उन्होंने कहा कि इसलिए स्थिति पहले जैसी नहीं है। इस नये माहौल और बदलाव की स्थिति में नये सिरे से समझ विकसित करने की जरूरत है जिससे कि दोनों पक्षों के बीच भरोसा मजबूत हो सके। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच शीर्ष नेतृत्व से लेकर सेना के स्तर पर बातचीत निरंतर जारी है और कोर कमांडरों को छिटपुट विवादों को स्थानीय स्तर पर दूर करने की जिम्मेदारी दी गयी है।

'मामले की सुनवाई तेजी से पूरी करने की जरूरत'

- बदलापुर स्कूल यौन उत्पीड़न केस में हाईकोर्ट सख्त, कहा- बच्चियां बहुत छोटी, जल्द पूरी हो सुनवाई

मुंबई,(एजेंसी)। पिछले साल अगस्त में ठाणे के बदलापुर इलाके में स्थित एक स्कूल के शौचालय में चार और पांच साल की दो लड़कियों का एक पुरुष अटेंडेंट ने यौन उत्पीड़न किया था। अब इस मामले पर बॉम्बे हाईकोर्ट ने सख्ती दिखाई है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने सोमवार को बदलापुर स्कूल यौन उत्पीड़न मामले में एक बार फिर सख्ती दिखाई। अदालत ने कहा कि पीड़ित बच्चियां बहुत छोटी हैं इसलिए मामले की सुनवाई जल्द से जल्द पूरी होनी चाहिए। पिछले साल अगस्त का मामला गौरतलब है, पिछले साल अगस्त में ठाणे के बदलापुर इलाके में स्थित एक स्कूल के शौचालय में चार और पांच साल की दो लड़कियों का एक पुरुष अटेंडेंट ने यौन उत्पीड़न किया था। मामला सामने आते ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। हालांकि, अदालत ले जाते समय पुलिस के साथ मुठभेड़ हुई और वह मारा गया। वहीं, मामले की जांच के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा गठित विशेष जांच (एसआईटी) आरोप पत्र दायर कर चुकी है। इन लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दायर यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा (पॉक्सो) अधिनियम के प्रावधानों के तहत यौन उत्पीड़न की रिपोर्ट करने में नाकाम रहने के लिए स्कूल के प्रधानाध्यापक और उसके प्रबंधन के दो सदस्यों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया गया है। हाईकोर्ट ने घटना का खुद संज्ञान तब लिया था, जब यह बात सामने आई कि बदलापुर की स्थानीय पुलिस ने मामले में प्राथमिकी दर्ज करने के लिए तत्काल कार्रवाई नहीं की। श्मामले की सुनवाई तेजी से पूरी करने की जरूरतश सोमवार को लोक अभियोजक हितेन वेनेगांवकर ने न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और नीला गोखले की पीठ को सूचित किया कि मामले की जांच पूरी हो गई है। आरोप पत्र दायर किया गया है और अब मामले की सुनवाई होगी। इस पर अदालत ने जोर दिया कि मामले की सुनवाई तेजी से पूरी करने की जरूरत है। पीठ ने कहा, श्मामले को तेजी से आगे बढ़ाना होगा क्योंकि पीड़ित बच्चियां बहुत कम उम्र की हैं। साथ ही पॉक्सो कानून के तहत लड़कियों से पूछताछ के दौरान एक महिला अभियोजक को मौजूद रहना होगा। अब 20 को होगी सुनवाई वेनेगांवकर ने कहा कि इस मामले में विशेष लोक अभियोजक की सहायता के लिए एक महिला अभियोजक नियुक्त की गई है। वहीं, अदालत ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 20 जनवरी की तारीख तय की और तब तक अभियोजन पक्ष को मुकदमे की स्थिति के बारे में बताना होगा।

समिति की रिपोर्ट को भी किया जाएगा पेश पिछले साल, पीठ ने स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में बच्चों की सुरक्षा की जांच के लिए विशेषज्ञों की एक समिति गठित करने का भी आदेश दिया था।

सम्पादकीय

भौतिकवाद का परचम, अदृश्य नैतिक सिद्धांत

यह कहावत एकदम सत्य है कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहींस यदि सत्य सच्चाई नहीं होती तो मानव जीवन नहीं होता क्योंकि प्रगति पहाड़ झरना नदिया जंगल बुक और प्रकृति द्वारा दिए गए प्रतिशत के रूप में मानव सहित सांसारिक जीव जंतु प्राकृतिक सत्य की उत्पत्ति हैस और यह भी सत्य है कि मनुष्य अपने लालच,स्पृहा, कामना,कपट के चलते असत्यता झूठ और फरेब का सहारा और वैशाखी लेकर त्वरित लाभ के लिए जीवन के भाव सागर में कूद पड़ता है परंतु सत्य ही अंतिम सत्य है परंतु आज की परिस्थितियों में सच्चाई जीवन के हर पहलू से अरे होती जा रही है। आज हम स्वयं दिग्भ्रमित हैं तो आने वाली पीढ़ी को हम क्या नैतिक, संस्कारिक और सांस्कृतिक विरासत दे पाएंगे। आज के इस उत्तर आधुनिक समाज में जहां उपभोक्तावादी संस्कृति की प्रधानता के परिपेक्ष में भौतिक साधनों एवं सुखों के लक्ष्य की प्राप्ति की एकमात्र उपाय रह गई वहां भौतिकवाद तथा शारीरिक सुख की प्राप्ति का प्रचलन पूरे समाज में फैल गया है ।इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए झूठ फरेब एवं षड्यंत्र ने अपना जाल बुन रखा हैस प्राचीन काल से हम आध्यात्मिक, संस्कारिक,सांस्कृतिक रूप से बढ़ रहे थे पर विकास की अवधारणा ने एक नया स्वरूप ले लिया है इन परिस्थितियों में समाज के सदस्यों ने झूठ और फरेब का सहारा लेना शुरू कर दिया हैस भौतिकवाद सिर चढ़कर बोलने लगा हैस व्यक्तिगत एवं सामाजिक आत्मीय संबंधों के मूल्य का तेजी से क्षरण होने लगा हैस समाज के मूलभूत सिद्धांत तथा मूल्य गायब हो गए हैं। सामाजिक मूल्यों के खत्म होने की प्रक्रिया में सत्य बोलना कि एक मात्र साधन शेष रह गया है, किंतु वर्तमान समय में सच बोलना एक कठिन तप और तपस्या की तरह ही है। महात्मा गांधी के जीवन में भी उनके अध्यात्मिक दर्शन में सत्य अहिंसा मूल अवधारणा रही है उन्होंने इस सत्य को पहचाना और यह आशा प्रकट की कि यदि व्यक्तियों में सत्य के प्रति आस्था पैदा हो जाए तो सामाजिक नैतिकता का स्व ंस्वयं उच्च स्तर को प्राप्त कर सकता है और सही मायने में सत्य ही मनुष्य के आचरण की ऊंचाई मानी जाती है। सत्य और अहिंसा पर चलने के लिए संयम, मनोबल, आत्मशक्ति और ऊर्जा ही एक बड़ा विकल्प है । सत्य और अहिंसा स्वाभिमान के प्रतीक है सत्य बोलने वाला मनुष्य स्वाभिमानी होता है दूसरी तरफ असत्य आत्मग्लानि का द्योतक है। कबीर दास जी ने भी सत्य को ईश्वर मानकर कई दोहों की रचना की है। नकारात्मक व्यवहार सामाजिक स्तर पर किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण दुर्गुण है क्योंकि इसका प्रभाव पूरे समाज एवं देश पर गंभीर परिणाम देने लगता है। झूठ बोलना और सच को नेपथ्य में धकेलना एक सबसे बड़ी सामाजिक बुराई के रूप में सामने आई है। इसीलिए सामाजिक रूप से झूठ को सबसे बड़ा पाप कहा गया है पाप इस अर्थ में कहा गया है कि यह हमें दिग्भ्रमित करके वंचित कर्तव्य एवं रोजमर्रा के आत्मीय व्यवहार से वंचित रखता है और असत्य कथन को समस्त बुराइयों अपराधों की जननी माना जाता है। हम भौतिकवादी मानसिकता से इतने अधिक ग्रसित हो गए हैं की पारिवारिक सदस्यों के बीच हमारे आत्मीय संबंध लुप्त प्राय होते जा रहे हैं और ऐसे बनावटी परिवेश में व्यक्ति तथा समाज अपनी भौतिक मानसिक विलासिता तथा सफलता के दायरे में सिमट कर रह गया है। इसकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति अत्यंत उन्मुक्त निसंकोच तरीके से असत्य का सहारा लेने से भी नहीं चूक रहा है। भौतिक सुख साधनों की लालसा में मनुष्य में साधनों की सत्यता तथा शुद्धता फिर भी गहरा समझौता कर समाज में असामाजिक व्यवहार को अपना लिया है जिसके दूरगामी परिणाम भारतीय समाज के लिए अच्छे संकेत नहीं है। आज मनुष्य नैतिकता एवं अनैतिकता की बारीक लकीर हो पहचानने से काफी दूर हो गया है तथा भौतिक विकास के लिए किसी भी साधन को अपनाने से नहीं परहेज करता है। मानव बुद्धि विवेक संपन्न होने के कारण भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए हर तरह के उपायों को नए–नए हथकंडे के रूप है उपयोग करने लगा है जिससे समाज मे विसंगतियां पैदा होकर आत्मीय संबंधों की बलि चढ़ गई है। आदिकाल से ऐतिहासिक तौर पर भी मानव की सच्चरित्रता पर सवालिया निशान खड़े होते रहे हैं। समाज ने आपसी संबंधों को संचालित करने के लिए कुछ आदर्श मापदंड का प्रावधान भी रखा है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण सावधान सत्य बोलने का है किंतु मनुष्य अपने सुख साधन बटोरने के लिए सदैव सत्य से परहेज करने लगा जिससे मनुष्य नैतिकता से काफी दूर हो गया एवं सामाजिक मान्यताओं को छिन्न–भिन्न करता आया है। आज भौतिक साधन संपन्नता समाज में सर्वोच्च शिखर पर है और समाजिक व्यक्तिगत आत्मीय संवेदनशील संबंध ताक पर रख दिए गए हैं। नैतिकता सिद्धांतों की परिपाटी नष्ट प्राय होती जा रही है। ऐसे में एक आदर्श समाज की कल्पना बेमानी हो गई है। आज हमें सामाजिक मूल्यों को बचाने आत्मीय संबंधों की रक्षा करने के लिए सत्य तब और संयम का सहारा लेने की आवश्यकता होगी अन्यथा भारतीय समाज को पश्चिमी समाज के रूप में यहां संवेदनशीलता आत्मीयता और मानवीय संबंधों की गरिमा खत्म होने के कगार पर है अपनाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा एवं भारतीय मूल्य संस्कार संस्कृति धीरे धीरे सनातनी समाज से दूर होते जाएंगे और हम हाथ में हाथ धरे देखते रह जाएंगे। आज नैतिकता केवल दूसरों के लिए उपदेश देने की वस्तु बन कर रह गई है। मनुष्य सामाजिक व्यवस्था का स्वयं निर्माता है किंतु नैसर्गिक रूप से लोभी,आलसी, तथा संग्रहण की प्रवृत्ति वाला हो चुका है ऐसे में कम परिश्रम में ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए असत्य फरेब एवं जालसाजी का ही सहारा लेकर अनैतिकता का परचम फैलाने में लगा हुआ है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां और भारतीय खेती

आखिर मौसम पूर्वानुमान का कृषि उत्पादन में कितना और कैसा योगदान?

❍ भारत मौसम विज्ञान विभाग, कृषि मंत्रालय एवं कृषि विश्व–विधालयों से मिलकर कृषि समुदायों को मौसम के साथ–साथ संबंधित सेवाएं प्रदान करती है। विगत दशक में मौसम पूर्वानुमान की गुणवत्ता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे किसानों की क्षमताओं को बढ़ाने, स्थायी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य कृषि प्रणालियों के विकास में मौसम सूचना की महत्ती भूमिका रहती है।

डॉ लक्ष्मण सिंह राठौड़

खेती–किसानी मौसम और जलवायु के प्रति बहुत संवेदनशील है। यह भूमि, जल और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर भी बहुत अधिक निर्भर करती है, जो जलवायु द्वारा प्रभावित होते हैं। ऐसे में मौसम आधारित कृषि–कार्य करने की सलाह, किसानों को बुवाई और कटाई का उचित समय तय करने, पानी और उर्वरक प्रबंधन, कीट और रोग नियंत्रण, एवं अन्य कृषि कार्यों पर मौसम अनुरूप निर्णय लेने में मदद करती हैं। इन सलाहकार सेवाओं का आधार अल्प, मध्यम एवं दीर्घ अवधि का मौसम पूर्वानुमान होता है, जिनके साथ जब फसल की स्थितियों की जानकारी संयुक्त होती है, तो कृषि खाद्य प्रणाली में किसानों को व्यावहारिक कृषि सलाह देने में मददगार होती है। भारत मौसम विज्ञान विभाग, कृषि मंत्रालय एवं कृषि विश्व–विधालयों से मिलकर कृषि समुदायों को मौसम के साथ–साथ संबंधित सेवाएं प्रदान करती है। विगत दशक में मौसम पूर्वानुमान की गुणवत्ता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे किसानों की क्षमताओं को बढ़ाने, स्थायी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य कृषि प्रणालियों के विकास में मौसम सूचना की महत्ती भूमिका रहती है। विकसित भारत 2047 पहल, साल 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में परिकल्पित करती है। यह परिवर्तनकारी रोडमैप, समावेशी विकास, सतत–प्रगति और प्रभावी शासन पर जोर देता है। कृषि उत्पादकता और लचीलापन बढ़ाना विकास भारत 2047 को प्राप्त करने हेतु निर्धारित रणनीति के अनुरूप पर्याप्त अवसर पैदा करने के लिए शीर्ष नौ प्राथमिकताओं में से एक है। इन लक्ष्यों को किसानों, विशेष रूप से सीमांत और छोटे किसानों की सक्रिय भागीदारी के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है, क्योंकि वे पौष्टिक भोजन की उपलब्धता में सुधार के प्रमुख चालकों में से एक हैं।

विकसित भारत के लिए लक्ष्य

विकसित भारत के विभिन्न पहलुओं में आर्थिक विकास, पर्यावरणीय स्थिरता, सामाजिक प्रगति और सुशासन जैसे विकास के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जो सभी मौसम संवेदी हैं, ताकि 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाया जा सके। इसके लिए, अभी तक पहुंच से वंचित छोटे और सीमांत किसानों को लक्षित करते हुए देश में कृषि मौसम विज्ञान सेवा को मजबूत करने की आवश्यकता है। साथ ही इसे खाध्य प्रसंस्करण प्रणालियों, कृषि उपज मंडियों तथा कृषि विपणन प्रणालियों से जोड़ने पर भी विशेष बाल देना होगा।

लघु और सीमांत जोत देश में कुल धारिता का लगभग 86: है। कृषि की व्यवहार्यता को बढ़ाए बिना और छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि किए बिना विकसित भारत का विचार हासिल नहीं किया जा सकता है। निरंतर उत्पादकता और बाजार के दबावों का सामना करते हुए, भारत में कृषि को अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता और नवाचार क्षमता बढ़ाने के लिए नए उपकरणों की आवश्यकता है। बड़ी संख्या में छोटे और सीमांत किसानों और कृषि क्षेत्र के विशाल विस्तार को ध्यान में रखते हुए, कृषि आर्थिक विकास में सुधार के लिए किसानों के इस वर्ग को सरकारी एजेंसियों से समर्थन देश के आर्थिक विकास को मजबूत करेगा। साथ ही, उन्हें अपने हितों की रक्षा करने के लिए मौजूदा विनियामक ढांचे को संशोधित करने में महत्वपूर्ण हितधारक बनाना होगा, जिससे वे कृषि नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने में सक्षम हो सकें जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके।

जलवायु परिवर्तन और इससे संबंधित चुनौतियां

किसानों के लिए जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती रही है क्योंकि यह उनकी उत्पादन क्षमता, खाद्य सुरक्षा और आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। जलवायु परिवर्तन से किसानों की जीवन स्थितियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है। उन्हें फसल की विफलता और पशुधन के नुकसान के तत्काल जोखिम का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन और शमन रणनीतियों के लिए किसानों की क्षमता कमजोर है। छोटे और सीमांत किसान बड़े किसानों की तुलना में भूजल पर अधिक निर्भर करते हैं जो तेजी से घट रहा है। इसलिए उन्हें भविष्य में पानी के संबंध में और अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अतः किसानों के लिए मौसम आधारित जल प्रबंधन महत्वपूर्ण है। सतही सिंचाई प्रणालियों में मौसम आधारित प्रबंधन करने की नितांत आवश्यकता है। एकीकृत कीट प्रबंधन जिसमें विभिन्न कीटों एवं रोगों की मौसम आधारित रोक–थाम के लिए भी किसानों की क्षमता को मजबूत करने की आवश्यकता है।

कृषि मौसम विज्ञान सेवाओं की पहुंच को मजबूत करना जरूरी

किसानों के सामने आने वाले कई मुद्दों और चुनौतियों के बीच, उपयुक्त कृषि मौसम विज्ञान सेवाओं तक खराब पहुंच एक बड़ी बाधा है। इस कारण खेती के तरीकों में उपयुक्त मौसम संवेदनशील निर्णय जैसे कि बुवाई, निराई–गुड़ाई, इनपुट प्रबंधन, प्रौद्योगिकी उपयोग, भूमि और जल प्रबंधन इत्यादि प्रभावित होते हैं। उपयुक्त कृषि मौसम सलाह सेवा प्रदान करने हेतु श्अंतिम मीलश बाधा को संबोधित करने की आवश्यकता है क्योंकि सेवा का लाभ इस बात पर निर्भर करता है कि कितने किसानों तक यह सूचना पहुंचती है। एक शोध के अनुसार सूचना के 24:, 50: और 100: किसानों तक पहुंचने पर राष्ट्र के किसानों द्वारा अर्जित आर्थिक लाभ क्रमशः 44,321, 92,335 तथा 1,84,671 करोड़ रुपये होगा। कृषि मौसम सलाह सेवाएं, आंकड़ों की उपलब्धता और गुणवत्ता और उनका विश्लेषण करने वाले सूचना उत्पादकों की क्षमता से प्रेरित होती हैं। चूंकि यह सलाह कृषक समुदायों की आजीविका पर सकारात्मक प्रभाव डालती है और खाद्य सुरक्षा में सुधार करती है, इसकी सूचना को उचित संदर्भ और स्थान विशिष्ट जानकारी सहित अंतिम उपयोगकर्ता किसानों तक उचित समय पर एवं सही भाषा में पहुंचानी आवश्यक है। इसके लिए सूचना–प्रसारण प्रोद्योगिकी माध्यमों जैसे की रेडियो, टेलिविजन, मुद्रण सामग्री, नवीनतम मोबाइल प्रौद्योगिकियों एवं सामाजिक मीडिया की सहायता ली जाती है। सीमांत व मझोले किसानों और सबसे अधिक हाशिए वाले समुदायों तक पहुंचना बहुत बड़ी चुनौती है। यदि कार्रवाई योग्य जानकारी को उपयोगकर्ताओं तक न्यायसंगत और प्रभावी तरीके से संप्रेषित किया जाना है, तो यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कोई भी पीछे न छूटे। खाद्य एवं कृषि संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार जलवायु सेवाओं पर अंतिम मील की पहुंच के लिए इन सेवाओं के निवेश में महत्वपूर्ण अंतर है। यह दुर्भाग्य की बात है।

भारत के लिए खतरे की घंटी है चीनी परियोजना

प्रभाकर मणि तिवारी

चीन ने हाल में अरुणाचल से लगे सीमावर्ती इलाके में ब्रह्मपुत्र नदी पर एक बड़ा बांध बनाने का एलान किया है। इसने भारत और बांग्लादेश की चिंता बढ़ा दी है। अब उस एलान को ध्यान में रखते

हुए अरुणाचल में सियांग बहुउद्देशीय परियोजना को शीघ्र हरी झंडी दिखाने पर जोर दिया जा रहा है। लेकिन स्थानीय लोग विभिन्न वजहों से उस परियोजना का विरोध कर रहे हैं। यारलुंग नदी अरुणाचल प्रदेश में सियांग के नाम से जानी जाती है। आगे बढ़ते हुए असम पहुंचने पर उसका नाम बदल कर ब्रह्मपुत्र हो जाता है। देश की सीमा पार बांग्लादेश पहुंचने पर यह नदी जमुना कहलाती है। चीनी बांध का बांग्लादेश में भी प्रतिकूल असर पड़ने का अंदेशा है। इस नदी की कुल लंबाई करीब 2880 किलोमीटर है। इसका 1625 किलोमीटर यानी आधे से ज्यादा हिस्सा तिब्बत में है। भारत और बांग्लादेश में इसकी कुल लंबाई क्रमशः 918 और 337 किमी है। चीन ने वैसे तो वर्ष 2021 में ही ऐसे बांध के निर्माण का संकेत दिया था। उस समय इससे होने वाले नुकसान को कम करने के लिए ही भारत सरकार ने अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी पर एक बहुउद्देशीय परियोजना का खाका तैयार किया था। लेकिन स्थानीय आदिवासियों के विरोध के कारण यह मामला फिलहाल आगे नहीं बढ़ सका है।

चीनी परियोजना से 60 हजार मेगावाट बिजली पैदा होगी। चीन सरकार ने हालांकि दावा किया है कि इससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। लेकिन भारत में पर्यावरणविदों का कहना है कि यह बांध अरुणाचल प्रदेश से सटे तिब्बत के जिस इलाके में बनना है वह भूकंप के लिहाज से बेहद संवेदनशील है। इस बांध से इलाके का पारिस्थितिकी संतुलन भी गड़बड़ा सकता है। इसके अलावा निचले हिस्से यानी अरुणाचल प्रदेश और असम में इसकी वजह से खेती और जैव विविधता पर बेहद प्रतिकूल असर पड़ने की आशंका है। पर्यावरणविदों की चिंता की वजह यह है कि पहले भी इलाके में ऐसी कई प्राकृतिक आपदाएं हो चुकी हैं। वर्ष 2000 में यारलुंग सांगपो की सहायक नदी ईगोंग सांगपो में भूकंप के कारण बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ था। इसकी वजह से अरुणाचल प्रदेश व असम में आई भयावह बाढ़ से जान–माल का भारी नुकसान हुआ था। इसी तरह वर्ष 2017 में आए भूकंप से इलाके में दो अस्थायी झीलें बन गई थी। भू–वैज्ञानिकों का कहना है कि वह दोनों झीलें हल्के भूकंप की स्थिति में भी फट कर इलाके में तबाही मचा सकती हैं। चीन के एलान के बाद इसके मुकाबले के लिए इलाके में सियांग बहुउद्देशीय परियोजना को शीघ्र लागू करने की मांग बढ़ रही है। लेकिन स्थानीय लोग इसका विरोध कर रहे हैं। उनकी दलील है कि इस परियोजना के कारण इलाके के 13 गांव पूरी तरह डूब जाएंगे और 34 गांवों के लोगों की आजीविका और जीवन प्रभावित होगा। लेकिन अरुणाचल प्रदेश के उप–मुख्यमंत्री चाउना मीन कहते हैं कि स्थानीय लोगों को नुकसान पहुंचा कर कोई बांध नहीं बनेगा। लेकिन यह परियोजना चीनी परियोजना के खतरों से निपटने के लिए बेहद अहम है। उनका कहना है कि आम लोगों की राय और सार्वजनिक सुनवाई के बाद ही यह परियोजना आगे बढ़ेगी। मीन कहते हैं कि यह परियोजना महज पनबिजली के लिए नहीं बल्कि चीनी खतरों से निपटने के लिए बी जरूरी है। अगर चीन ने अतिरिक्त पानी छोड़ दिया तो ब्रह्मपुत्र घाटी से लेकर गुवाहाटी के सरायघाट ब्रिज तक सब कुछ डूब जाएगा। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने भी चीनी परियोजना पर चिंता जताते हुए कहा है कि चीनी परियोजना पूरा होने की स्थिति में ब्रह्मपुत्र का पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह नाजुक हो जाएगा।

दिल्ली के चुनाव 'आप' के लिये परीक्षा की घड़ी

दिल्ली में जीत के नये कीर्तिमान गढ़ने वाली नई नवेली 'आप' ने साल 2013 में अपने पहले चुनाव में 70 में से 28 सीटें जीतकर सबको चौंका दिया था। उस समय भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी लेकिन 'आप' ने कांग्रेस से मिलकर सरकार बनाई। देश का दिल कहे जाने वाली राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव–2025 का बिगुल बज चुका है, कड़कड़ाती सर्दी में भारतीय जनता पार्टी, आम आदमी पार्टी एवं कांग्रेस के बीच राजनीतिक दंगल के आगाज के साथ राजनीतिक पारा भी चढ़ने लगा है। उम्मीद की जा रही है कि ठण्ड का पारा गिरने–चढ़ने का रिकॉर्ड बनाने वाली दिल्ली इस बार मतदान का नया रिकॉर्ड बनाने के साथ राजनीति उठापटक का भी नया इतिहास बनायेगी। दिल्ली में चुनावों के ऐलान के साथ ही आरोप–प्रत्यारोप का दौर शुरू हो चुका है। एक दूसरे की कलई खोलने की कोशिशें हो रही हैं। 'आप' दिल्ली में हैट्रिक लगाने की तैयारी में है, तो भाजपा सत्ता विरोधी लहर, शीश महल, भ्रष्टाचार के आरोप को आधार बनाकर उसे रोकना चाहती है। कांग्रेस अपनी खोयी जमीन को पाने की जद्दोजहद में जुटी है। सबसे दिलचस्प एवं रोमांचक इस चुनाव में देखना है दिल्ली की जनता किसके सर पर ताज पहनाती है? चुनाव की घोषणा से पहले ही तीनों राजनीतिक दल आम मतदाता को लुभाने के लिये तरह–तरह की घोषणाएं करते हुए जनता से मुखातिब हो रहे हैं, जनता के बीच जा रहे हैं, सभाएं कर रहे हैं, यात्रा निकाल रहे हैं। 'आप' तमाम तरह की संकट एवं संघर्षपूर्ण स्थितियों के बावजूद मजबूती बनाये हुए है, क्योंकि आप–सरकार की योजनाएं और कार्यक्रम, जैसेकि सरकारी स्कूलों का कायाकल्प, मोहल्ला क्लीनिक और मुफ्त बिजली, साथ ही महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा और वरिष्ठ नागरिकों को फ्री में तीर्थ यात्रा कराना उसकी ताकत बनी हुई है। नयी घोषणाओं के साथ वह अपनी इस ताकत को बढ़ाते हुए 'आप' ने महिलाओं को 2100 रुपये हर महीने देने, बुजर्गों को फ्री इलाज, ऑटो चालकों को 10 लाख का बीमा देने, पंडितों एवं ग्रंथियों को 18 हजार प्रतिमाह जैसी कई योजनाओं का ऐलान किया है, जो पूरे चुनाव का रुख मोड़ सकती हैं। 'रेवड़ी पर चर्चा' जैसी मुहिम से 'आप' हर वोटर के घर तक पहुंच रही है। पब्लिक को बार–बार याद दिला रही है कि उनकी सरकार ने क्या–क्या काम किए हैं। लेकिन 'आप' के खिलाफ सरकार में 10 साल रहने की वजह से सत्ता विरोधी लहर काफी बढ़ गई है। कई वोटर बदलाव की जरूरत महसूस करते हैं। दिल्ली का विकास अवरुद्ध है, वायु प्रदूषण जानलेवा साबित हो रहा है, यमुना प्रदूषित हो चुकी है, जनता को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल रहा है, सड़के गड्ढों में तब्दील हो चुकी है। अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया समेत पार्टी के सभी प्रमुख नेताओं की भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तारी हुई है। 'शीश महल' विवाद ने अरविंद केजरीवाल की छवि को नुकसान पहुंचाया है। इससे पार्टी की साफ सुथरी छवि धूमिल हुई है। इसके अलावा मतभेद की वजह से कई नेता छोड़ गए, इससे केजरीवाल की जीत की संभावनाओं पर असर पड़ सकता है। लगता है कि 'आप' की उलटी गिनती तो शुरु हो गयी है, देखना है वह कहां जाकर रूकती है। दिल्ली में जीत के नये कीर्तिमान गढ़ने वाली नई नवेली 'आप' ने साल 2013 में अपने पहले चुनाव में 70 में से 28 सीटें जीतकर सबको चौंका दिया था। उस समय भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी लेकिन 'आप' ने कांग्रेस से मिलकर सरकार बनाई। लेकिन यह सरकार सिर्फ 49 दिनों तक चल पाई। अरविंद केजरीवाल ने फरवरी 2014 में ये कहते हुए इस्तीफा दे दिया कि दिल्ली विधानसभा में संख्या बल की कमी की वजह से वो जन लोकपाल बिल पास कराने में नाकाम रहे हैं, इसलिए फिर से चुनाव बाद पूर्ण जनादेश के साथ लौटेंगे। 2015 में जब चुनाव हुआ तो दिल्ली की राजनीति में इतिहास रचते हुए 'आप' ने 70 में से 67 सीटें जीत लीं। वर्ष 2020 में भी आप ने जीत का कीर्तिमान बनाते हुए 62 सीटें जीती। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार का चुनाव काफी रोचक होने वाला है लेकिन यह 'आप' के लिये चुनौतीपूर्ण होने के साथ संकटपूर्ण है। जिस भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अन्ना आंदोलन के बीच से आम आदमी पार्टी का जन्म हुआ, इसी मुद्दे पर भाजपा केजरीवाल को घेरने की पुरजोर कोशिश कर रही है। आप को भाजपा ही नहीं, कांग्रेस से भी बड़ा खतरा है। भाजपा ने अभी अपने पूरे उम्मीदवारों की सूची भी जारी नहीं की है लेकिन चुनाव प्रचार अभियान के लिए पार्टी ने अपने स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उतार दिया है और उन्होंने अपनी पहली ही चुनावी सभा में आम आदमी पार्टी पर आक्रामक हमला बोलते हुए उसे दिल्ली के लिये 'आप–दा' यानी बड़ा संकट कह दिया है। आप के नेताओं पर लगे भ्रष्टाचार के आरोप, एलजी ऑफिस के साथ टकराव और कई अन्य फैसले 'आप' की विश्वसनीयता एवं सुदृढ़ता को नुकसान पहुंचा रहे हैं। दिल्ली विधानसभा का चुनाव इसलिए ज्यादा ही महत्वपूर्ण है कि इसका असर राष्ट्रव्यापी होता है। दिल्ली सरकर की सांविधानिक शक्तियां भले ही सीमित हों, मगर राष्ट्रीय मीडिया के केंद्र में होने के नाते इसके नेताओं को तुरंत राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय पहचान बन जाती है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि दिल्ली को एक मॉडल स्टेट बनना चाहिए था, मगर न यह विकास का मॉडल बन सका और न ही सुचारू सुशासन प्रणाली का। दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ–व्यवस्था एवं विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर देश की राजधानी की दुर्दशा एवं ठहरा हुआ विकास एक बदनुमा दाग है, विडंबना यह है कि इसके लिए 'आप' सरकार दोषी होते हुए भी क्या आम जनता की अदालत में दोषी साबित होगी? भाजपा, कांग्रेस और आप तीनों के लिए यह विधानसभा चुनाव करो या मरो की स्थिति वाला है। पिछले तीन लोकसभा चुनावों से केंद्र में सरकार बनाने वाली और दिल्ली की सभी संसदीय सीटें लगातार जीतने के बावजूद भाजपा पिछले 26 वर्षों से राजधानी की सत्ता से दूर है। यही नहीं, दिल्ली नगर निगम में दशकों से कायम उसकी सत्ता भी छिन चुकी है। ऐसे में इस टीस को वह इस विधानसभा चुनाव में जरूर दूर करना चाहेगी और इसके लिये उसकी तैयारी ही केजरीवाल के लिये संकट का बड़ा कारण है। विश्लेषकों का कहना है कि यह चुनाव इसलिए भी रोचक होने जा रहा है क्योंकि इसके नतीजे राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करेंगे और सबसे ज्यादा, आम आदमी पार्टी के भविष्य को तय करेंगे। दिल्ली की यह चुनावी लड़ाई इस मायने में खास नहीं कही जाएगी कि इस बार भी वही तीनों दल प्रमुखता से मैदान में हैं, जो पिछले चुनावों में थे। 'आप' के अस्तित्व में आने के बाद से यहां त्रिकोणिय मुकाबला ही हो रहा है। यह अलग बात है कि इस अपेक्षाकृत नई पार्टी ने एक बार वर्चस्व स्थापित होने के बाद यहां अपनी पकड़ कमजोर नहीं होने दी। पिछले दो चुनावों में उसे दिल्ली की जनता से शानदार बहुमत मिला। नई और दो राज्यों में सत्तारूढ़ होने के बावजूद 'आप' ने मुफ्त की संस्कृति एवं आक्रामक शैली की राजनीति से अपनी अलग पहचान बनाई है। इस आक्रामकता एवं मुफ्त की संस्कृति ने जहां 'आप' को नई धार दी है, ताकत दी, पहचान दी वहीं अन्य दलों के साथ उसके संबंधों को भी सहज–सामान्य होने से रोका है। धीरे–धीरे उसकी यही ताकत उसकी कमजोरी बनती जा रही है। भाजपा एवं कांग्रेस भी उस पर हमले करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रही। इसमें खास बात सिर्फ यही है कि छह महीने पहले हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और आप दोनों ही विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन में शामिल थे और भाजपा पर संयुक्त हमला कर रहे थे। जाहिर है, इनके बीच की तीखी बयानबाजी इंडिया गठबंधन के अंदर असहजता पैदा कर रही है और शिवसेना (यूबीटी) जैसे दल इनसे संयम बरतने की अपील भी कर चुके हैं। जिस तरह से विधानसभा चुनाव–2025 लड़ा जा रहा है, उससे साफ है कि नतीजा चाहे जो भी हो उसके निहितार्थ दूर तक जाएंगे। दिल्ली की सत्ता 'आप' के आंतरिक समीकरण के लिहाज से भी अहम है। ऐसे में वह हर हाल में अपनी कामयाबी दोहराना चाहेगी। लेकिन इस चुनाव में परीक्षा सिर्फ इन राजनीतिक पार्टियों की नहीं, बल्कि दिल्ली के मतदाताओं की भी होगी कि वे अपनी समस्याओं के प्रति कितनी सजगता दिखाते हैं? इस बार दिल्ली की जनता को अपने हित की बजाय दिल्ली के हित में सोचना है।

पूर्व मुख्यमंत्री की प्रतिमा का किया अनावरण किया

महाकुंभ नगर। कुम्भ मेला क्षेत्र में समाजवादी नेता,पूर्व रक्षा मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव स्मृति सेवा संस्थान के शिविर का उद्घाटन, मूर्ति का अनावरण विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय ने किया। जिलाध्यक्ष गंगापार अनिल यादव, महानगर अध्यक्ष सैयद इफ्तेखार हुसैन, विजमा यादव, दान बहादुर मधुर, नाटे चौधरी,आर एन यादव, सचिन श्रीवास्तव, मंजू यादव, दूध नाथ पटेल, संदीप यादव, मौजूद रहे।

महाकुंभ में पुलिस ने पानी में तैयार किया फ्लोटिंग पुलिस चौकी, 45 दिनों तक करेगा कार्य

प्रयागराज। महाकुंभ में यूपी पुलिस की ओर से पानी में फ्लोटिंग पुलिस चौकी स्थापित की गई है। श्रद्धालुओं की सहायता के लिए इसका शुभारंभ पौष पूर्णिमा स्नान पर्व पर सोमवार को किया गया।

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित श्रद्धालुओं/रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए **महाकुम्भ मेला 2025** के दौरान गाड़ी संख्या 01817/01818 खजुराहो - प्रयागराज छिवकी अनारक्षित मेला विशेष रेलगाड़ी का बीना तक विस्तार किये जाने का निर्णय लिया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित हैः-

01817 बीना - प्रयागराज छिवकी			01818 प्रयागराज छिवकी - बीना	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
--	11:00	बीना	17:30	--
12:05	12:10	ललितपुर	15:40	15:45
13:10	13:15	टीकमगढ़	14:10	14:15
14:00	14:05	खरगापुर	13:30	13:35
15:10	15:15	छतरपुर	12:30	12:35
17:05	17:30	खजुराहो जं.	11:15	11:45
18:10	18:12	सिंहपुर-डुमरा	10:30	10:32
18:53	18:55	महोबा जं.	09:50	09:52
21:10	21:15	बाँदा	08:55	09:00
21:58	22:00	अतर्रा	07:30	07:32
23:15	23:20	चित्रकूट धाम कर्वी	06:50	06:55
00:45	00:50	मानिकपुर जं.	06:00	06:05
01:33	01:35	शंकरगढ़	04:33	04:35
02:50	--	प्रयागराज छिवकी	--	03:45

• **बीना से** गाड़ी संख्या 01817, **दिनांकः** 13.01.25 से 16.01.25, 28.01.25 से 05.02.25, 11.02.25 से 14.02.25, 25.02.25 से 28.02.25 • **प्रयागराज छिवकी से** गाड़ी संख्या 01818, **दिनांकः** 14.01.25 से 17.01.25, 29.01.25 से 06.02.25, 12.02.25 से 15.02.25, 26.02.25 से 01.03.25.

नोटः रेल यात्रियों को सुझाव दिया जाता है कि उपरोक्त रेलगाड़ियों की समय-सारणी, संरचना एवं अन्य स्टेशनों पर ठहराव से संबंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन नं. 139, एनटीईएस ऐप एवं रेल मदद वेबसाईट www.railmadad.indianrailways.gov.in के माध्यम से अद्यतन जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

महाकुम्भ 2025 रेलवे टोल फ्री नं0 1800 4199 139 | उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 79/25(MG)

उत्तर मध्य रेलवे द्वारा मेले में आने वाले अपने सम्मानित श्रद्धालुओं/रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये **मुख्य स्नान पर्व मकर संक्राति दिनांक 14.01.2025** को 90 मेला विशेष रेलगाड़ियों के संचालन की योजना बनायी गयी है, जिसमें से छोटी दूरी की 18 मेला विशेष रेलगाड़ियाँ समय-सारणीबद्ध हैं। शेष मेला विशेष रेलगाड़ियों का संचालन आवश्यकतानुसार किया जायेगा। समय-सारणीबद्ध 18 मेला विशेष रेलगाड़ियों का विवरण निम्नवत् हैः-

विशेष गाड़ी सं.	स्टेशन से	प्रस्थान का समय	स्टेशन तक	आगमन का समय	संचालन की तिथि (दिन)	मार्ग के अन्य स्टेशनों पर ठहराव
प्रयागराज जं. से कानपुर सेंट्रल की ओर जाने वाली मेला विशेष रेलगाड़ियाँ						
00104	प्रयागराज जं.	05:00	कानपुर सेंट्रल	10:15	14.01.2025 (मंगलवार)	सूबेदारगंज, भरवारी, सिराथू, खागा, फतेहपुर एवं बिंदकी रोड
00105	प्रयागराज जं.	16:05	कानपुर सेंट्रल	19:30		
00106	प्रयागराज जं.	19:50	कानपुर सेंट्रल	01:25		
00107	प्रयागराज जं.	21:30	कानपुर सेंट्रल	02:40		
प्रयागराज जं./प्रयागराज छिवकी से पं. दीन दयाल उपाध्याय जं. की ओर जाने वाली मेला विशेष रेलगाड़ियाँ						
00204	प्रयागराज जं.	09:30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	13:20	14.01.2025 (मंगलवार)	नैनी जं., मेजा रोड, मांडा रोड, विंध्याचल, मिर्ज़ापुर एवं चुनार जं.
00205	प्रयागराज जं.	12:00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	15:15		
00206	प्रयागराज जं.	15:30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	20:45		
00207	प्रयागराज जं.	18:00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	23:45		
00208	प्रयागराज जं.	19:30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	00:35		
00209	प्रयागराज जं.	21:30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	04:30		
00402	प्रयागराज छिवकी	20:30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	03:30		मेजा रोड, मांडा रोड, विंध्याचल, मिर्ज़ापुर एवं चुनार जं.
प्रयागराज जं./प्रयागराज छिवकी/नैनी जं. से वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी/बाँदा/चित्रकूट धाम कर्वी की ओर जाने वाली मेला विशेष रेलगाड़ियाँ						
00305	प्रयागराज जं.	13:30	वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी	01:00	14.01.2025 (मंगलवार)	नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., चित्रकूट धाम कर्वी, अतर्रा, बांदा जं., महोबा, कुलपहाड़, हरपालपुर, मऊरानीपुर, निवाड़ी एवं ओरछा
00503	प्रयागराज छिवकी	16:45	बांदा जं	22:45		शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., चित्रकूट धाम कर्वी एवं अतर्रा
00603	नैनी जं.	18:00	चित्रकूट धाम कर्वी	22:15		शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा एवं मानिकपुर जं.
प्रयागराज जं./प्रयागराज छिवकी/नैनी जं. से सतना/कटनी की ओर जाने वाली मेला विशेष रेलगाड़ियाँ						
00304	प्रयागराज जं.	10:40	कटनी जं.	17:30	14.01.2025 (मंगलवार)	नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., टिकरिया, मझगवां, जैतवार, सतना, मैहर एवं झुकेही
00306	प्रयागराज जं.	20:15	कटनी जं.	04:00		
00504	प्रयागराज छिवकी	20:55	कटनी जं.	04:30		शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., टिकरिया, मझगवां, जैतवार, सतना, मैहर एवं झुकेही
00604	नैनी जं.	21:00	सतना	03:30		शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., टिकरिया, मझगवां एवं जैतवार

नोटः- रेल यात्रियों को सुझाव दिया जाता है कि उपरोक्त रेलगाड़ियों की समय-सारणी, संरचना एवं अन्य स्टेशनों पर ठहराव से संबंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139, एनटीईएस ऐप एवं रेल मदद वेबसाइट www.railmadad.indianrailways.gov.in के माध्यम से अद्यतन जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

महाकुम्भ 2025 रेलवे टोल फ्री नं0 1800 4199 139 | उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 78/25(A)

‘हर-हर महादेव, जय श्री राम...’ जयघोष करते हुए श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकीय

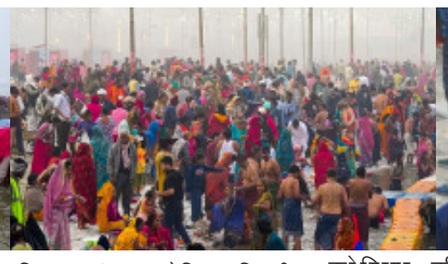

प्रयागराज। भव्य महाकुंभ 2025 आस्था, भक्ति और आध्यात्मिक एकता के जबरदस्त प्रदर्शन के साथ शुरू हुआ है। जिसने आज 144 वर्षों में एक बार देखी गई आध्यात्मिक भव्यता की याद ताजा कर दी। यहां देश और दुनिया भर से भक्तों का एक समूह न केवल जप, ध्यान और आध्यात्मिक तृप्ति के लिए एकत्र हुआ, बल्कि महाकुंभ की बेजोड़ सांस्कृतिक विरासत का अनुभव करने के लिए भी एकत्र हुआ। पवित्र नगरी प्रयागराज में संगम नोज समेत स्थायी और अस्थायी घाटों पर भारी भीड़ है। कई भक्तों को दिव्य वातावरण से अभिभूत, नम आंखों के साथ देखा गया। वहीं कई लोग प्रार्थना, अनुष्ठान और एकता की भावना में डूबे रहे। दो दिन पहले ही लाखों श्रद्धालुओं ने पवित्र स्नान करना शुरू कर दिया था, जो दर्शाता है कि 45 दिवसीय महाकुंभ 2025 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लगाए गए भीड़ के अनुमान को पार कर सकता है। शुरुआती दिनों में भारी भीड़ से पता चलता है कि इस साल का समागम पहले से कहीं ज्यादा बड़ा होगा। पौष पूर्णिमा पर, अपने गहन आध्यात्मिक अनुशासन के लिए जाने जाने वाले कल्पवासियों ने श्मोक्षदायिनीश संगम में पवित्र डुबकी लगाई और 45 दिनों तक चलने वाले अपने आध्यात्मिक एकांतवास की शुरुआत की। कल्पवासी महाकुंभ अवधि के दौरान ब्रह्मचर्य, साधारण जीवन और नियमित प्रार्थना के सख्त व्रत का पालन करते हैं। उन्होंने न केवल अपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक उत्थान के लिए बल्कि मानवता के कल्याण के लिए भी प्रार्थना की। इस वर्ष, महादेव की पूजा के लिए शुभ दिन सोमवार को पड़ने वाले पौष पूर्णिमा के संयोग ने इस अवसर को आध्यात्मिक रूप से और भी महत्वपूर्ण बना दिया। संगम नोज समेत सभी प्रमुख घाटों पर डुबकी लगाते समय श्रद्धालु हर–हर महादेव, जय श्री राम और जय बजरंग बली के जयकारे लगाते नजर आए। बिहार, हरियाणा, बंगाल, ओडिशा, दिल्ली, उत्तराखंड, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश समेत विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु आए। महाकुंभ की भव्यता ने न केवल भारतीय श्रद्धालुओं, बल्कि दुनिया भर से आए पर्यटकों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। संगम घाट पर अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्रियों और आध्यात्मिक साधकों का तांता उत्सव में शामिल हुआ। दक्षिण कोरिया के कई यूट्यूबर इस दिव्य अनुभव को अपने कैमरों में कैद करते नजर आए, जबकि जापान के पर्यटकों ने स्थानीय गाइडों से इस आयोजन के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व को समझने की कोशिश की। सोमवार को रूस–अमेरिका समेत यूरोप के विभिन्न देशों से आए श्रद्धालु आस्था और एकता के इस महापर्व के साक्षी बने और डुबकी भी लगाई। कई अंतरराष्ट्रीय मेहमानों में स्पेन की क्रिस्टीना भी शामिल थीं, जिन्होंने महाकुंभ की भव्यता के लिए अपनी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त की और इसे ष्जीवन में एक बार होने वाला अनुभवष बताया। उल्लेखनीय रूप से, इस वर्ष के महाकुंभ में अपेक्षित भीड़ कई देशों की आबादी को पार करने की उम्मीद है, जो इसे वास्तव में एक वैश्विक आयोजन बनाती है। विदेशी भक्त न केवल इस आयोजन को देखने के लिए आकर्षित हुए, बल्कि अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हुए भी देखे गए, जिसमें अन्य देशों के कई साधु और संन्यासी सनातन धर्म को अपनाते हुए और आध्यात्मिक आशीर्वाद के रूप में पवित्र डुबकी लगाते दिखाई दिए। महाकुंभ की जीवंत ऊर्जा संगम मेला और लेटे हनुमान मंदिर के पास के बाजार क्षेत्रों तक फैल गई। पूजा सामग्री के विक्रेता और तिलक कलाकार भक्तों की बढ़ती भीड़ को संभालने में व्यस्त देखे गए। प्रसाद, चुनरी और दीया सामग्री बेचने वाले खुदरा विक्रेताओं ने बताया कि इस साल तीर्थयात्रियों की आमद 2019 के कुंभ मेले से भी अधिक हो गई है।

प्रथम स्नान पर्व पौष पूर्णिमा पर संगम पर आस्था का महासंगम, हर-हर गंगे के जयकारों से गूंजीं दिशाएं

प्रयागराज। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर श्रद्धालुओं का अद्भुत नजारा देखने को मिला। महाकुंभ के पहले स्नान पर्व पौष पूर्णिमा के पावन अवसर पर महाकुंभ में पहले स्नान पर्व पर देशभर से आए श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। आधी रात से ही श्रद्धालु और कल्पवासी संगम तट पर जुटने लगे थे। हर–हर गंगे और जय श्रीराम के गगनभेदी जयकारों से पूरा मेला क्षेत्र गूंज उठा। कैबिनेट मंत्री एके शर्मा ने महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं का माला पहनाकर स्वागत किया। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं तड़के से ही संगम स्नान के लिए पहुंचने लगे। आस्था का ऐसा आलम था कि सिर पर गठरी का वजन भी उनके उत्साह को कम नहीं कर सका। संगम नोज, एरावत घाट और वीआईपी घाट समेत समस्त घाटों पर सुबह से ही श्रद्धालु स्नान करते नजर आए। युवाओं ने इस पावन क्षण को कैमरे में कैद किया और सोशल मीडिया पर साझा किया। इस बार युवाओं में सनातन संस्कृति और आध्यात्मिकता के प्रति खासा उत्साह देखने को मिला। संगम स्नान और दान–पुण्य में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने पवित्र संगम तट पर पूजा–अर्चना और दान कर पुण्य लाभ अर्जित किया। गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर मेला क्षेत्र में सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए गए हैं। इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर से चप्पे–चप्पे की निगरानी की जा रही है। डीआईजी और एसएसपी खुद मॉनिटरिंग कर रहे हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है।

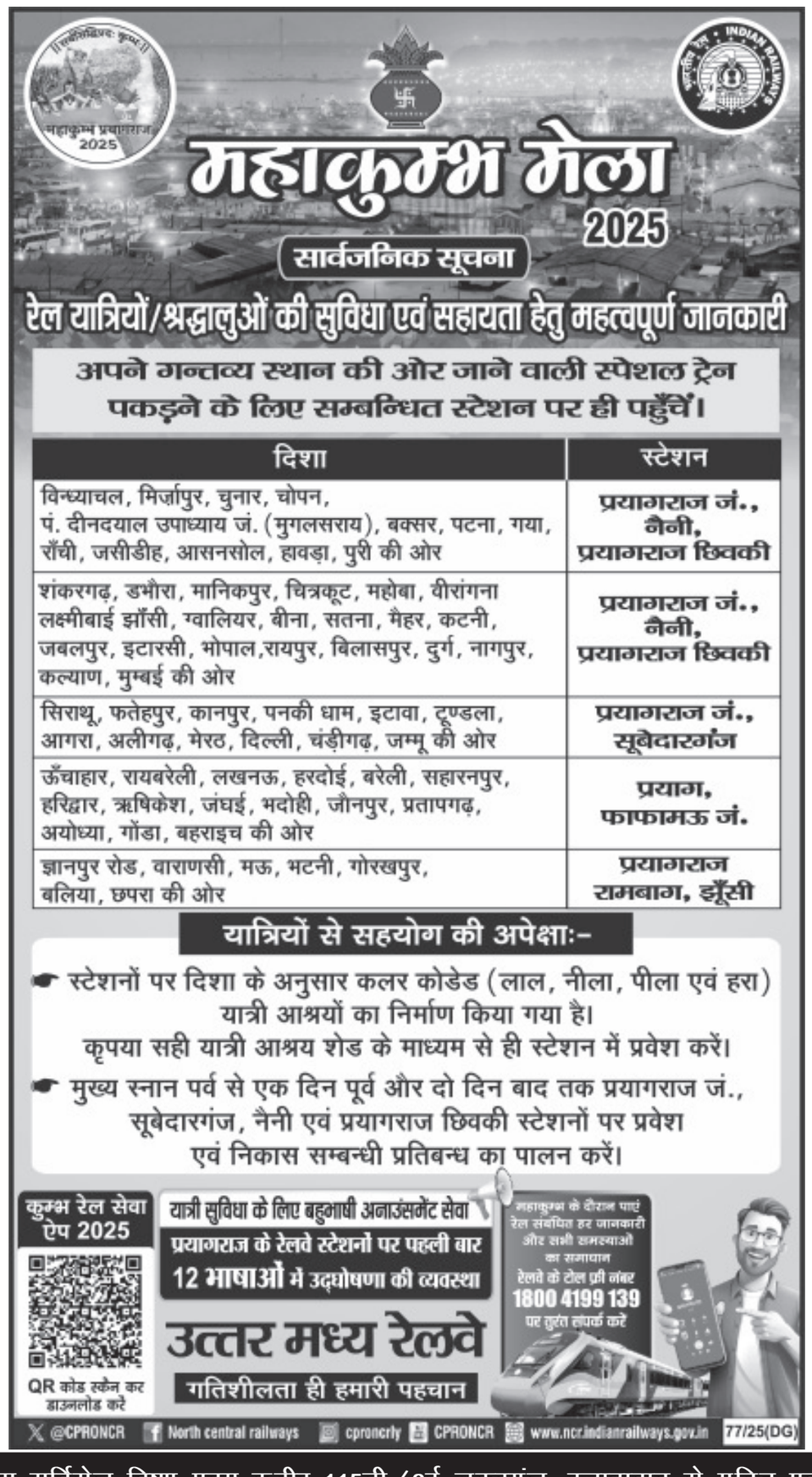

महाकुंभ का आगाज: संगम पर विश्व का सबसे बड़ा समागम, संगम की रेती पर विश्व की संस्तियों का महामिलन

प्रयागराज। 144 साल बाद दुर्लभ संयोग में रविवार की आधी रात संगम पर पौष पूर्णिमा की प्रथम डुबकी के साथ महाकुंभ का शुभारंभ हो गया। विपरीत विचारों, मतों, संस्कृतियों, परंपराओं स्वरूपों का गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की त्रिवेणी के तट पर महामिलन 45 दिन तक चलेगा। इस अमृतमयी महाकुंभ में देश–दुनिया से 45 करोड़ श्रद्धालुओं, संतों–भक्तों, कल्पवासियों और अतिथियों के डुबकी लगाने का अनुमान है। समुद्र मंथन के दौरान निकले कलश से छलकीं अमृत की चंद बूंदों से युगों पहले शुरू शुरू हुई कुंभ स्नान की परंपरा का सोमवार को 13 जनवरी से आगाज हो रहा है। दुनिया भर के धार्मिक आयोजनों में सबसे बड़ा यह मेला 26 फरवरी तक चलेगा। इस बार महाकुंभ में 183 देशों के लोगों के आने की उम्मीद है। इन विदेशी मेहमानों के स्वागत और आतिथ्य के लिए योगी आदित्यनाथ सरकार की ओर से भव्य तैयारियां की गई हैं। यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्ज महाकुंभ को केंद्र और प्रदेश की सरकारें विश्व समुदाय के समक्ष अद्भुत रूप में प्रस्तुत करना चाह रही हैं। मेला क्षेत्र में रोजाना 800 से अधिक सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। पहली बार 10 लाख वर्ग फीट में दीवारें पेंट की गईं हैं। जानकारी के मुताबिक, कुंभनगरी में सबसे ज्यादा फोकस सेक्टर–18 पर रखा गया है। यहां वीआईपी गेट भी बनाया गया है। इस पॉइंट पर 72 देशों के ध्वज लगे हुए हैं, जिनके नुमाइंदे भी मेले में शामिल होने के लिए आ रहे हैं। वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खुद उनकी आगवानी करने की तैयारी कर रखी है। सुरक्षा व्यवस्था चाक–चौबंद रखने के मकसद से कुंभनगरी के हर सेक्टर में पुलिस थाने बनाए गए हैं। साथ ही, फायर ब्रिगेड की टीमें भी तैनात की गई हैं। कुंभनगरी में कुल 56 अस्थायी थाने बने हैं। 37 हजार पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं, जिन्हें हर तरह की आपात स्थितियों से निपटने की ट्रेनिंग दी गई है। कुंभ मेले में भारी भीड़ के बीच किसी के खोने जैसी बातें आम हैं, लेकिन इसके लिए भी खास तैयारी की गई है। इस बार श्रद्धालुओं की मदद के लिए 15 लॉस्ट एंड फाउंड सेंटर बनाए गए हैं। बता दें कि 12 वर्ष बाद प्रयागराज में महाकुंभ लगा है। 2013 कुंभ मेले के लिए 1214 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया थाा। उस दौरान 160 किमी लंबी सड़कों का निर्माण कराया गया था। स्वच्छता के लिए 35 हजार शौचालयों का निर्माण कराया गया था। आंकड़ों के मुताबिक, 2013 के कुंभ मेले के दौरान शहर में करीब 70 लाख श्रद्धालु आए थे, लेकिन इस बार 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। ज्योतिषियों की मानें तो जब बृहस्पति कुंभ राशि और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, तब कुंभ लगता है। त्रिवेणी संगम के कारण प्रयाग का महाकुंभ सभी मेलों में ज्यादा महत्व रखता है। कहा जाता है कि देवताओं और राक्षसों के बीच समुद्र मंथन के दौरान 14वें रत्न के रूप में अमृत कलश निकला था, जिसे हासिल करने के लिए उनमें संघर्ष हुआ। असुरों से अमृत बचाने के लिए भगवान विष्णु ने विश्व मोहिनी रूप धारण कर वह अमृत कलश अपने वाहन गरुड़ को दे दिया। असुरों ने गरुड़ से वह कलश छीनने का प्रयास किया तो अमृत की कुछ बूंदें प्रयागराज, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में गिर गईं। कहा जाता है कि तब से हर 12 साल बाद इन स्थानों पर कुंभा मेला आयोजित किया जाता है। महाकुंभ कब से शुरू हुआ, इस संबंध में कुछ भी लिखित प्रमाण नहीं है। हालांकि, इस मेले का सबसे पहला लिखित प्रमाण बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेनसांग के लेख में मिलता है। उन्होंने छठवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में होने वाले कुंभ मेले का वर्णन किया है। वहीं, ईसा से 400 वर्ष पूर्व सम्राट चंद्रगुप्त के दरबार में आए एक यूनानी दूत ने भी ऐसे ही मेले का जिक्र अपने लेख में किया है।

पिता पर आश्रित न होने के आधार पर अनुकंपा नियुक्ति से इन्कार नहीं कर सकते, कोर्ट ने स्वीकार की अर्जी

प्रयागराज । केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट) ने कहा कि मृतक पिता पर आश्रित न होने और बड़े भाई के आवेदन को पहले निरस्त किए जाने के आधार पर आवेदक को अनुकंपा नियुक्ति देने से इन्कार नहीं किया जा सकता। अधिकरण ने याचिका स्वीकार कर आवेदन पर नए सिरे से विचार करने का निर्देश दिया। यह आदेश न्यायमूर्ति ओम प्रकाश सप्तम ने मुकेश कुमार की अर्जी पर दिया। झांसी निवासी आवेदक के पिता रामनाथ डिवीजन रेलवे झांसी में ही ट्रैकमैन के पद पर कार्यरत थे। 27 जनवरी 2018 को उनकी मृत्यु हो गई। आवेदक के बड़े भाई ने अनुकंपा नियुक्ति के लिए आवेदन किया, जिसे 21 जून 2018 को निरस्त कर दिया गया। इसके बाद आवेदक ने अनुकंपा नियुक्ति के लिए आवेदन किया।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. **UPHIN/2007/22706** रजि.नं. **AD-32/2008-09** ईमेलः **amritkt.alld@gmail.com** फोन नं. : **9453273951, 8799627062**

उत्तर प्रदेश सरकार

'महाकुम्भ 2025 प्रयागराज' में पुण्यकाल का श्रीगणेश

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

(13 जनवरी से 26 फरवरी)

प्रथम अमृत स्नान

मकर संक्रांति

14 जनवरी, 2025

एकता का महाकुम्भ

आगामी प्रमुख स्नान पर्व

मौनी अमावस्या - 29 जनवरी, 2025
बसंत पंचमी - 03 फरवरी, 2025
माघी पूर्णिमा - 12 फरवरी, 2025
महाशिवरात्रि - 26 फरवरी, 2025

आकस्मिक सेवाएं | मेला प्रशासन | आवास एवं आहार | लोककल्याणकारी सरकार

कुम्भ सहायक चैटबॉट हेतु QR कोड स्कैन करें

कुम्भ सहायक
वाट्सऐप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

mahakumbh_25/ upmahakumbh MahaKumbh_2025 https://kumbh.gov.in/